

भाजपा की ब्रह्म दशा

रे सा लगता है कि नितिन गडकरी की अध्यक्षता में पार्टी विद् ए डिफरेंस की ग्रहदशा कुछ अच्छी नहीं चल रही है। एक तो चिर असंतुष्ट शत्रुघ्न सिन्हा उर्फ बिहारी बाबू फिर से असंतुष्ट हो गये हैं, बल्कि पार्टी का मुसलिम चेहरा कहे जाने वाले शहनवाज हुसैन, यशवंत सिन्हा, डॉ. सी. पी. ठाकुर भी असंतुष्ट हैं। इनके असंतोष का कारण है कि पार्टी के सांगठनिक ढांचे में कहीं भी इन्हें जगह नहीं दी गई है जबकि ये भाजपा के वरिष्ठ सदस्यों में रहे हैं। यशवंत सिन्हा और डॉ. सी. पी. ठाकुर तो केंद्र में मंत्री भी रह चुके हैं। ऐसे वरिष्ठ नेताओं का महत्त्व गडकरी को न मालूम हो ऐसा हो नहीं सकता। फिर निश्चय ही किसी दबाव में इन्होंने उपरोक्त नेताओं को कोई उच्च पद नहीं दिया। सभी जानते हैं कि यशवंत सिन्हा का आडवाणी से छत्तीस का आंकड़ा है।

शत्रुघ्न सिन्हा भाजपा में बने तो हुए हैं, पर कभी भी इन्हें इनके मनोनुकूल पद नहीं मिला। चूंकि इनका फिल्मी कैरियर अब समाप्त हो गया है और दूसरी किसी पार्टी इन्हें भाव देने के लिए तैयार नहीं है, इसलिए भाजपा में बने रहना इनकी मजबूरी है। जहां तक डॉ. सी. पी. ठाकुर का सवाल है, जब ये मंत्री रह चुके हैं और बिहार में भाजपा मतदाताओं पर इनकी अच्छी-खासी पकड़ भी है तो इन्हें केंद्रीय कार्यकारिणी में स्थान नहीं देना गडकरी की भारी भूल कही जा सकती है। पर यहां ध्यान में रखना होगा कि गडकरी अपनी इच्छा से भाजपा में कुछ नहीं कर रहे। ये जो कुछ कर रहे हैं, वह संघ के निर्देश पर। इसलिए इन्होंने अब उमा भारती के प्रति नरम रवैया अपना रखा है और इस बात में कोई संदेह नहीं दिखाई पड़ता कि कहीं उमा भारती भी एक दिन भाजपा में फिर आ न जायें। इनकी अपनी पार्टी जब लाख उपाय करने पर कारगर नहीं हो सकी तो इन्होंने आडवाणी से यह आग्रह किया था कि इन्हें भाजपा में शामिल कर लिया जाये और यदि ऐसा नहीं किया जा सकता है तो कम से कम उनकी पार्टी को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में ही शामिल कर लिया जाये। पर आडवाणी मौन रहे और उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। इसके बाद उमा भारती संघ की शरण में गईं। संघ केसरिया बाने को वैसे भी महत्त्व देता है और उमा भारती ने जब कहा कि वह संघ

के एजेंडे को पार्टी में लागू करने का प्रयास करेंगी तो संघ ने गडकरी को यह निर्देश दिया कि इनके प्रति नरम रुख रखो और जब जरूरत पड़ेगी तो इन्हें भाजपा में शामिल कर लिया जायेगा। पर संघ से दूरी बना कर रहने वालों को पार्टी में महत्त्वपूर्ण स्थान न दो। यही कारण है कि शत्रुघ्न सिन्हा से लेकर सी. पी. ठाकुर और यशवंत सिन्हा को दूर ही रखा गया। यह कहा जाता है कि शत्रुघ्न सिन्हा पार्टी के प्रचारक के तौर पर अच्छी भूमिका निभाते हैं और फिल्मी दुनिया से होने के कारण स्टार प्रचारक हैं, पर अब फिल्मी गतिविधियों से दूर हो जाने के कारण उनका पहले जैसा क्रेज नहीं रह गया है। वहीं डॉ. सी.पी.ठाकुर को उनके योग्य संगठन में उचित स्थान दिया जायेगा जब वे विदेश यात्रा से लौट जायेंगे। रहा सवाल शहनवाज हुसैन का तो जूनियर होने के बावजूद उन्हें वाजपेयी मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया था और चूंकि वे युवा हैं, इसलिए उन्हें भी उच्च पद से नवाजा जायेगा। इसके साथ ही यह ध्यान रखना होगा कि वे पार्टी का मुसलिम चेहरा हैं। अब पार्टी में मुसलमान नेता नहीं के बराबर रह गये हैं, इसलिए मुसलमानों को बरगलाने के लिए उनका पार्टी कार्यकारिणी में होना आवश्यक है। गडकरी ने उन्हें उनके योग्य पद न दे कर भूल की है। संघ नेतृत्व भी यह मानने को विवश हो रहा है। देखा जाये तो गडकरी ने अभी जो अपनी टीम बना रखी है, वह ज्यादा दमदार नहीं है। भाजपा के सूत्रों का मानना है कि संघ ने दबाव दे कर गडकरी को अध्यक्ष बनवाया है, पर गडकरी का वोटों में कोई प्रभाव नहीं है, क्योंकि अध्यक्ष बनने के पूर्व इन्होंने कोई ऐसा काम नहीं किया है कि जनता उन्हें जाने।

अब भी आम जनता में गडकरी का नाम अपरिचित ही है। ऐसे व्यक्ति के नेतृत्व में पार्टी अगर सत्ता में आने का ख्वाब पालती है तो यह गलत ही होगा। पार्टी सूत्रों का मानना है कि भाजपा के किसी वरिष्ठ नेता को ही अध्यक्ष पद दिया जाना ठीक था, विशेषकर उसे जिसे जनता जानती और पहचानती हो। अक्सर लोग पूछ बैठते हैं कि गडकरी कौन हैं और भाजपा में कब आये। उत्तर भारत के लोग जहां पार्टी का आधार है, गडकरी को जानने वाले बहुत ही कम हैं। अन्य जगहों पर भी इनका नाम लोगों ने अखबारों और मीडिया के माध्यम से ही जाना है। अध्यक्ष बन

जाने के बाद भी गडकरी ने अभी तक कोई ऐसा काम नहीं किया है कि लोग उनके बारे में जाने। ऐसा लगता है कि वे ऊपर से थोपे हुए कोई व्यक्ति हों। वे नेता हैं और उनमें नेतृत्व के गुण हैं, ऐसा प्रतीत नहीं होता।

भाजपा में अटल-आडवाणी के अलावा भी ऐसे नेताओं की कोई कमी नहीं है जो लोकप्रिय हैं और जो अध्यक्ष पद के दावेदार थे। इनमें एक नाम जो लिया जा रहा है वह सुषमा स्वराज का है। यह बात अलग है कि आडवाणी की जगह उन्हें लोकसभा में विपक्ष का नेता बनाया गया है, पर यदि उन्हें पार्टी का अध्यक्ष बनाया जाता तो वे गडकरी से बीस ही रहतीं। इससे भाजपा यह दावा कर सकती थी कि उसने अध्यक्ष बनने का मौका एक महिला को दिया। दूसरी तरफ, लंबे समय में उन्होंने जो छवि बनायी है, उसमें उग्र हिंदूवादी का लेबल उन पर नहीं लगा है। वे एक तेज-तरंग नेत्री हैं और अपने भाषणों से लोगों को अपनी तरफ खींच लेने की क्षमता रखती हैं। पहले यह कयास लगाया जा रहा था कि राजनाथ के बाद उन्हें ही पार्टी अध्यक्ष बनाया जायेगा। पर जब गडकरी के नाम की घोषणा की गई तो बहुत से लोग चौंक उठे। इसकी वजह यह थी कि गडकरी एक लो प्रोफाइल नेता रहे हैं और महाराष्ट्र से बाहर बहुत कम ही जाने जाते रहे हैं। मीडिया में भी इनकी कोई खास छवि नहीं रही है। पता नहीं संघ के नेताओं को इनमें क्या गुण नजर आये कि इन्होंने अध्यक्ष के रूप में इनका नाम प्रस्तावित किया।

गडकरी की भंगिमाओं का देखते हुए यह लगता है कि वे भाजपा को कहीं नहीं ले जा पायेंगे। इनके अध्यक्ष रहने के दौरान भाजपा का पतन होना सुनिश्चित है। अभी तक इन्होंने पार्टी के स्तर पर कोई ऐसा प्रयास नहीं किया है जिससे यह लगे कि ये भाजपा में नई जान फूंक पायेंगे। जहां तक भाजपा की लोकप्रियता का सवाल है, यह दिन-ब-दिन घटती ही जा रही है। अभी की भाजपा को देखते हुए ऐसा लगता है कि यह शायद ही सत्ता के शिखर पर कभी पहुंच सकती है। गडकरी ने यह अवश्य कहा है कि मुसलमान राममंदिर बनाने में सहयोग करें तो हिंदू भी मस्जिद बनाने में सहयोग करेंगे। इससे ऐसा लगता है कि मंदिर-मस्जिद से अलग इनके दिमाग में कुछ है ही नहीं। अब मंदिर समर्थकों का

भी यह मानना है कि मंदिर का मुद्दा मर गया है। दूसरे, मंदिर बनाने की बात से लोग खीज से जाते हैं। उनका कहना है कि जब सत्ता में रहने के दौरान भाजपा मंदिर नहीं बनवा सकी तो अब क्या खाक बनवायेगी। अब तो भाजपा द्वारा सरकार बना पाना भी मुश्किल है। इस वर्ष के अंत में बिहार विधानसभा का चुनाव प्रस्तावित है। वहां भाजपा की क्या भूमिका होगी? वहां भाजपा के नारे क्या होंगे? इस संबंध में भाजपा नेतृत्व शशोपंज में है। बिहार में अभी नीतीश कुमार की तृती बोल रही है। भाजपा वहां उनके गठबंधन में शामिल है, पर नीतीश के सामने उसकी स्थिति दोयम दर्जे वाली है। वैसे नीतीश भाजपा के साथ गठबंधन बनाये रखेंगे, पर भाजपा को अपनी दोयम दर्जे वाली स्थिति से ही संतुष्ट रहना पड़ेगा। बिहार में अटल-आडवाणी को तो सभी जानते हैं, पर गडकरी को नहीं। अब तक बिहार में भाजपा को जो वोट मिलते रहे हैं, वह अटल-आडवाणी के नाम पर ही। इनके बाद सुषमा स्वराज की लोकप्रियता है, पर भाजपा नेता के रूप में शत्रुघ्न सिन्हा भी लोकप्रिय नहीं हैं। बिहार की जनता जो अपेक्षाकृत राजनीतिक रूप से जागरूक है, शत्रुघ्न सिन्हा को बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में नहीं स्वीकार कर सकती है। इस बात को समझते हुए भाजपा ने कभी इन्हें इस रूप में चुनाव में नहीं खड़ा किया। बिहार में किसी राजनीतिक व्यक्ति को ही मान्यता दी जाती है। यह ठीक है कि शत्रुघ्न सिन्हा भाजपा से काफी पहले से जुड़े हैं, पर उनके राजनीतिक व्यक्तित्व पर उनका फिल्मी व्यक्तित्व हावी रहा है। अपनी फिल्मी पारी खत्म होने पर अब वे अपने बेटे की फिल्मी पारी की शुरुआत कर रहे हैं और उसकी फिल्म के प्रचार के लिए जगह-जगह घूम रहे हैं।

जहां तक बिहार में भाजपा की संभावनाओं का सवाल है, गडकरी के नेतृत्व में उसमें वृद्धि संभव नहीं है। वहां नीतीश के अलावा और कोई संभावनापूर्ण नेता नहीं रह गया है। रामविलास पासवान चाह कर भी उनका स्थान नहीं ले सकते। अन्य राज्यों में भाजपा की स्थिति अच्छी नहीं है। राजस्थान भाजपा में कलह है। उत्तर प्रदेश जहां से सबसे ज्यादा सांसद चुन कर आते हैं, वहां भाजपा का कायदे से कोई अध्यक्ष ही नहीं है। गडकरी के नेतृत्व को वहां भी मानने वाला कोई नहीं है।

सब अपनी डफली, अपना राग बजाने वाले हैं। मध्य प्रदेश में शिवराज चौहान को अच्छी सफलता मिली है। सबसे बड़ कर उन्होंने संन्यासिन उमा भारती के पर कतर डाले हैं, इसलिए भाजपा का नेतृत्व उनसे काफी प्रसन्न है। उमा भारती की स्थिति अब न तीन में है, न तेरह में। अगर भाजपा का नेतृत्व उनके समर्थन में नहीं आता तो वह कहीं की नहीं रहेंगी। इस बात की पूरी संभावना है कि भाजपा नेतृत्व उनके पक्ष में नहीं आयेगा, क्योंकि एक समय था जब उन्होंने अटल और आडवाणी को पानी पी-पी कर कोसा था। अटल तो खैर अब टल गये हैं, पर आडवाणी अभी टले नहीं हैं। गडकरी के अध्यक्ष बनने के बावजूद नेपथ्य से उनकी भूमिका जारी रहेगी। यह अलग बात है कि विपक्ष के नेता का पद अब सुषमा स्वराज को दे दिया गया, पर आगामी लोकसभा चुनाव में उनकी भूमिका प्रमुख रणनीतिकार की होगी। भाजपा को सत्ता के शिखर तक पहुंचाने में आडवाणी की ऐतिहासिक भूमिका रही है, इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। अटल देश के प्रधानमंत्री नहीं बन सकते थे, अगर आडवाणी ने सारथी की भूमिका नहीं निभाई होती। आडवाणी में इतना दम-खम अभी बचा हुआ है कि वे पार्टी अध्यक्ष की भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वाह कर सकते थे। अगर युवा लोगों को ही नेतृत्व की बागडोर देनी थी तो सुषमा स्वराज अथवा अनंत कुमार को यह स्थान दिया जा सकता था। यशवंत सिन्हा को भी मौका दिया जा सकता था। ये निश्चित रूप से गडकरी से ज्यादा कारगर साबित होते। पर दिक्कत यह है कि ये संघ के विश्वासपात्र नहीं हैं। पर जो संघ का विश्वासपात्र हो, वह भाजपा अध्यक्ष के रूप में सफल हो सके, यह जरूरी नहीं है। कुल मिला कर गडकरी को भाजपा अध्यक्ष बना कर संघ ने ऐसा काम किया है जो भाजपा के हित में नहीं है। गडकरी के नेतृत्व में भाजपा की नाव डूबेगी ही। इसलिए अब संघ एवं भाजपा नेतृत्व को यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि पार्टी फिर कभी केंद्र की सत्ता में आ सकेगी। हां, इतना जरूर है कि वह मुख्य विपक्षी दल होने लायक भी मत न ला सके। अन्य राज्यों में जहां अभी भाजपा की सत्ता है, वहां भी चुनाव होने पर उसे हार का मुंह देखना पड़ सकता है।

-मनोज कुमार झा

वामपंथियों द्वारा तीसरा मोर्चा बनाने की कोशिश

कभी कारगर नहीं हुआ तीसरा मोर्चा

राजनीति के हाशिये में जा चुके वामपंथियों ने अब फिर तीसरे मोर्चे का नाम लेना शुरू किया है। वामपंथी जो एक समय शेर बने फिरते थे, अब उन्हें कोई पूछने वाला नहीं रहा। दरअसल, वामपंथी अति आत्मविश्वास के शिकार हो गये थे। इन्हें यह महसूस हो रहा था कि इनके बिना केंद्र सरकार चल नहीं सकती। पर इनके द्वारा सरकार से समर्थन वापस ले लेने के बावजूद सरकार गिरी नहीं और दूसरी बार जब इनकी मदद के बिना ही कांग्रेस ने अपने सहयोगियों के साथ मिल कर सरकार बना ली तो इनका भ्रम दूर हो गया। दरअसल, संग्राम सरकार से समर्थन वापस लेने के बाद ही इन्होंने 'तीसरा मोर्चा' बनाने की कवायद शुरू कर दी थी। पर अवसरवादी संभावित घटक दलों के कारण उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली। इसके बाद लालू प्रसाद और उनके कतिपय सहयोगियों ने चौथा मोर्चा

बनाने की कोशिश भी की। पर यह मोर्चा भी नहीं बन सका। अब लालू, मुलायम और रामविलास राजनीति के हाशिये पर आ गये हैं। इन नेताओं की समझ में यह बात नहीं आ रही कि क्या करें कि केंद्र की राजनीति में सिक्का जम सके। लालू-मुलायम-रामविलास आदि नेताओं का भविष्य अंधकारमय लगता है तो राजनीतिक समीक्षकों का मानना है कि अगले चुनाव में वामपंथियों का गढ़ माना जाने वाला पश्चिम बंगाल भी उनके हाथ से निकलने वाला है। वहां संभवतः ममता बनर्जी अपनी सरकार बनायेंगी। कहा जा रहा है कि अगर गठबंधन बनाने की नौबत भी आई तो कांग्रेस के साथ मिल कर सरकार बन सकती है। ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में सिंगूर और नंदीग्राम में संघर्ष कर अपनी जड़ें मजबूत कर ली हैं। वैसे ममता विरोधी वामपंथियों का कहना है कि वह नक्सलवादी तत्वों से मिली हुई हैं, पर इसमें कोई सच्चाई नहीं है। यह

बात अलग है कि नक्सलवादी गतिविधियों से ममता बनर्जी चुनावी दृष्टि से मजबूत होकर उभर रही हैं, पर नक्सलवादी ममता बनर्जी की मदद नहीं कर सकते। दरअसल, पश्चिम बंगाल की जनता वामपंथियों के शासन से उब चुकी है और कोई न कोई विकल्प चाहती है। यह देख कर कि राज्य में ममता बनर्जी का वर्चस्व बढ़ता ही चला जा रहा है, वामपंथियों के पसीने छूट रहे हैं। इसलिए भी वे राष्ट्रीय स्तर पर अपना कोई गठबंधन बनाना चाहते हैं जो गैर कांग्रेसी और गैर भाजपाई हो।

इसके लिए वे लालू, मुलायम, रामविलास, ओमप्रकाश चौटाला आदि नेताओं को लेकर एक बार फिर तीसरा मोर्चा बनाना चाहते हैं। यहां प्रश्न यह खड़ा होता है कि क्या अब तीसरा मोर्चा का गठन संभव है। वामपंथियों के साथ ही उपरोक्त सभी नेता पिटे हुए हैं। इन्हें जनता ने नकार दिया है। मुलायम सिंह का उत्तर प्रदेश में जनाधार है, पर वहां

मायावती ने अपना सिक्का जमा लिया है। इसी प्रकार लालू यद्यपि सांसद बनने में सफल रहे, पर दानापुर जैसे यादव बहुल क्षेत्र से हार गये। बराबर जीतने वाले और जीत में रिकार्ड कायम करने वाले रामविलास पासवान इस बार हार गये। ऐसे नेताओं को साथ लेकर वामपंथी कैसे तीसरा मोर्चा बना सकते हैं और अगर बना भी लिया तो आखिर किस तरह सत्ता में आ सकते हैं? यह पहली बार नहीं है कि तीसरा मोर्चा बनाने की कवायद की जा रही है। इसके पहले न जाने कितनी बार तीसरे मोर्चे का गठन किया गया और एकाधिक बार तो यह सत्ता में आया भी, पर इसका जो हश्र हुआ, उसके बारे में सभी जानते हैं। कभी भी यह मोर्चा स्थायित्व नहीं पा सका। बन कर बिखरना ही इसकी नियति रही। इसके बावजूद वामपंथी यदि तीसरा मोर्चा फिर से बनाने की कवायद करते हैं तो निश्चय ही इसमें इन्हें असफलता हाथ लगनी है। अभी

केंद्र में कांग्रेस और उसका गठबंधन संग्राम काफी मजबूत स्थिति में दिखाई पड़ रहा है। वह मजबूत इसलिए दिख रहा है, क्योंकि उसके विकल्प के रूप में दूसरी कोई पार्टी अथवा गठबंधन नहीं है। जहां तक भाजपा और उसके गठबंधन का सवाल है तो यह भी काफी कमजोर है। भाजपा में अभी आंतरिक उथल-पुथल जारी है और भाजपा अध्यक्ष गडकरी की समझ में यह नहीं आ रहा कि कैसे गुटबाजी पर काबू पाया जाये। इसलिए अभी और आने वाले दिनों में भी भाजपा केंद्र सरकार के लिए कोई चुनौती पेश नहीं कर सकती। जहां तक वामपंथियों का सवाल है, पश्चिम बंगाल में वामपंथियों का किला ढहते ही कहीं उनका वाममोर्चा भी बिखर न जाये। कुल मिला कर आज जैसी राजनीतिक परिस्थितियां बनी हुई हैं, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि तीसरा मोर्चा बनाने की कोशिश बेकार ही जायेगी।

-मनोज